4) 3/7/20 विभाग - हिन्दी नाम - डॉ॰ साधना कुमारी Time - 10:30 to 11:20

## Lecture - 2

### साहित्यिक विशेषताएँ

भक्ति भावना - मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की कृष्ण भक्ति है। इस भक्ति में विनय भावना, वैष्णवी प्रवृत्ति, नवधा भक्ति के सभी अंग शामिल हैं। कृष्ण प्रेम में मतवाली मीरा लोक-लाज, कुल-मर्यादा सब त्याग कर, ढोल बजा कर भक्ति के राग गाने लगी। वह कहती -

"माई री! मैं तो लियो गोविंदो मोल।
कोई कहै छानै, कोई कहै छुपकै, लियो री बजन्ता ढोल।"

मीरा के लिए राम और कृष्ण के नाम में कोई अंतर नहीं है। एक स्थल पर वह कहती है -

"राम-नाम रस पीजै"
~~आनन्द~~ मनवा! राम-नाम रस पीजै।
"मेरो मन रामहि-राम रटै
राम-नाम जप लीजै प्राणी! कोटिक पाप कटै।"

मीरा ने आँसुओं के जल से जो प्रेम-बेल बोई थी अब वह फैल गई है और उसमें आनंद-फल लग गए है।
मीरा के लिए जप, तप, तीर्थ आदि सब साधन व्यर्थ थे उनके लिए तो प्रेम-भक्ति ही सारतत्व है। वे कहती है -

"भज मन चरण कँवल अविनासी
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिए करवत कासी।"

मीरा तो अपने साँवरे के रंग में सराबोर हो गई है -

"मैं तो साँवरे के रंग राँची।
साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरू लोक लाज तजि नाची।"

रुक्मिणी की कामना है कि उसके प्रियतम कृष्ण उसकी आँखों

तक पहुँच गया है। प्रकृति की पुकार में उनका दर्द और बढ़ जाता है —

"मतवारो बादर आयै।
हरि को सनेसो कबहुँ न लायै।"

मीरा की भक्ति में उन्मत्तता है, पर अंधता नहीं। उनकी भक्ति के पद अतिरिक्त अन्य भावों के स्पष्ट चित्र हैं। मीरा के पदों में शृंगार रस के संयोग और वियोग दोनों पक्ष पाए जाते हैं, पर उनमें विप्रलंभ शृंगार की प्रधानता है। उन्होंने शांत रस के पद भी रचे हैं।

मीरा की भक्ति के सरस-सागर की कोई थाह नहीं है जहाँ जब तक चाहो गोते लगाओ। इसमें रहस्य-साधना भी समाई हुई है। संतों के सहज योग को भी मीरा ने अपनी भक्ति का सहयोगी बना लिया था —
"त्रिकुटी महल में बना है झरोखा तहाँ ते झाँकी लागरी"

मीरा के पदों में उनकी अनुभूति के सहज उद्गार हैं। उन्हें अनुमान भी न था कि उनके ये उद्गार पदों के रूप में काल के अक्षय भंडार के रूप में संकलित किए जाएँगे। उन्हें अलंकारों के आवरण में भावों को छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। उनका भावपक्ष इतना सबल है कि कलापक्ष का अभाव उनके नैसर्गिक सौंदर्य को साकार कर देता है। मीरा का काव्य तीव्र भावानुभूति का काव्य है।
मीरा के पद गीतिकाव्य का चरम उत्कर्ष हैं। ये पद संगीतज्ञों के कंठहार बने हुए हैं और आज तक सहृदयों को रससिक्त कर रहे हैं। गीतिकाव्य में मीरा आज भी अप्रतिम हैं। प्रेमोन्माद, तीव्रता और तन्मयता की त्रिवेणी का पूरा वेग उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है।
"हेरी मैं तो प्रेम दिवानी मेरो दरद न जाने कोय" की आत्माभिव्यक्ति उनकी तल्लीनता और तन्मयता के लिए प्रमाण स्वरूप है।